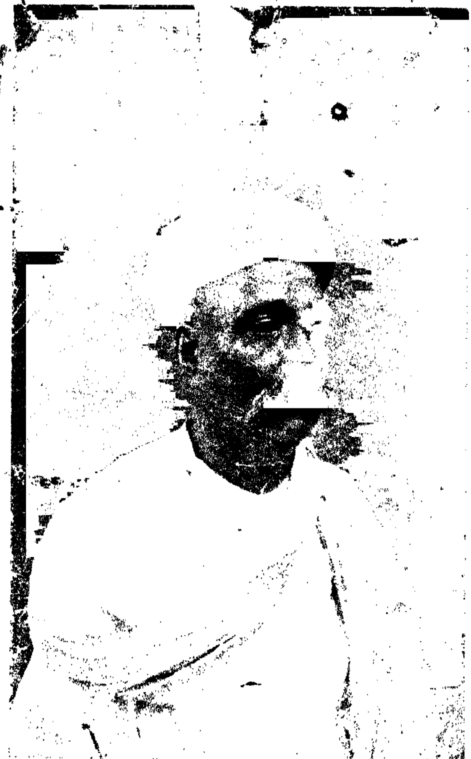
बाल गंगाधर तीलक.



" सुज्ञान जगता ! कळेल तुजसी रहस्य ह्या तिलका !
" उघड्या नानें पहा तरी या हिन्द भूमिच्या तिलका "

६०३५

गूजरात विद्यापीठ ग्रंथालय

[गुजराती कॉपीराअिट विभाग]

अनुक्रमांक ૮૦૩૫ वर्गांक

पुस्तकनुं नाम કાવ્યગંગાધર ભાગ ૩

विषय

बाल गंगाधर तिलक.

लेखक :

मावजी गोविंदजी शेठ.

प्रकाशक :

मोतीलाल शाम्लदास शर्मा.

जमनाबाई मेनशन्स.

सेन्डहर्स्ट रोड, मुंबई, ४

एक आनो.

ગુજરાતી કૉપીરાઈટ સંગ્રહ

તૈયાર થાય છે! થોડા દિવસમાં બહાર પડશે!

પ્રેમભક્તિ ગ્રંથમાળાનાં પુસ્તકો.

૧.

ચિત્રદર્શનો (નવું).

૨.

ન્હાના ન્હાના રાસ.

૨૦ નવા રાસ સાથે નવી આવૃત્તિ.

તે સિવાય કવિ ન્હાનાલાલ દલપતરામનાં ઉષા,
જયાજયંત, ઈન્દુકુમાર, પ્રેમકુંજ (નવું)
વિગેરે પુસ્તકોની નવી આવૃત્તિ
તૈયાર થાય છે.

પ્રકાશકઃ—મોતીલાલ શામળદાસ શર્મા,
જમનાબાઈ મેન્શન્સ,
સેંડહર્સ્ટ રોડ, મુંબઈ.

बाल गंगाधर तिलक.

ह्या कुण घेई शपथेला
" तारितो महाराष्ट्राला "

* * * *

या महाराष्ट्र देशांत सारेच दगड का वसत
कुणिच का नाहिं जीवन्त, हा विचार येउनि वदला
" तारितो महाराष्ट्राला "—आनंद.

ता० १ ली आगस्ट १९२०—आ तिथी भारतवर्षना इतिहासमां एक महा पर्वणी गणाशे; महात्मा गांधीनी असहकारनी भीष्म-प्रतिज्ञानी आद्य तिथी—लोकमान्य तिलकना परलोकगमननी पुण्यतिथी! अे दिन सिधाव्यो अे नरकेसरी—भारतवर्षनी अपमानित, दूभायली, रीबायली, रंक प्रजानां ज्वलन्त संदेश मालिकने दरबार प्होंचाडवा! " धाईअे प्रभु अनाथन के नाथ " ! !

भगवान् रामचंद्रजी वनवास सिधाव्या त्यारे अयोध्यानी प्रजा तेमने विनववा साथे गइ हती. तिलक महाराजे प्रभु—साम्राज्यनी वाट लिधी त्यारे मुंबापुरीनी पचरंगी प्रजाअे पण तेमज कर्युं. कडवाशो शामी

गई, भेद भूलाई गया, हृदयो ढळी पड्यां, मोती वजारे मोती वरसाव्यां, धनिकोअे सोना चांदी उछाळ्यां, इतर प्रजाअे पुष्पवृष्टि करी. मेघनो अश्रुपात पण रोक्यो रोकातो न्होतो. सौअे वन्दन कर्यां—नमन कर्यां—आत्मानां उंडाण अनुभव्यां—अने सौअे संगाथ कीधो—उभराती प्रजा चाली—भीनां वस्त्रोथी, भीनी आंखे, भींजेलां हृदये—स्मशानयात्रा करवा, अनन्य प्रजाप्रेमीने प्रेमनी अंजलि अर्पवा. आकाश गूढ, घेरुं अने गंभीर हतुं; वातावरणनी विशुद्धि अलौकिक हती—प्रजा ओघनी एकतानताना चमत्कारो कंईक और हता. भारतवर्षना समग्र प्रजाना प्रतिनिधी तरीके लाला लजपतराये तरत आवी साष्टांग प्रणाम कर्या. ब्राह्मणोअे मंत्राच्चार कर्यो. अग्निनी प्रथम ज्वाला प्रगटतां प्रजा एककंठे स्मरवा लागी हरि—विठ्ठल, विठ्ठल, विठ्ठल, विठ्ठल.

धन्य अे मुंबापुरीनी प्रजा, धन्य अे चोपाटीनो किनारो, धन्य अे जीवनप्रसंग. अे दृश्य अवर्णनीय हतुं. आखे रस्ते पुण्य नगरीनी अने मुंबापुरीनी भजनमंडळीओअे "ज्ञानोबा—तुकाराम" नी अविच्छिन्न धून मचावी हती. "ज्ञानोबा—तुकाराम" नो मर्म ते दिने समजायो, जीवनभर भूलाशे नहि. "ज्ञानोबा—तुकाराम" जीवन्त छे त्यां सूधी महाराष्ट्रनी कीर्तिज्योत पण ज्वलन्त छे.

ओ महाराष्ट्रनी प्रजा ! अमे त्हारा सदाना ऋणी छीअे—तारा अत्याचारो माफ छे. अे ज्ञानोबा—तुकाराम—अे श्रीसमर्थ स्वामी रामदास—अे गोब्राह्मणप्रतिपाळ श्री शिवाजी महाराज, आजे पण भारतना सहस्र वर्षना कलंकित इतिहासने उज्ज्वळ करे छे. "युगे युगे लूटायली" भारत वर्षनी आर्य संस्कृतिने ते हजी जाळवी राखी छे.

रजपूतोनी रजपूताईनां आजे तो खंडेरज देखाय छे. चीतोडनी भस्म जाणे पाताळमां उतरी गई होय अेम लागे छे. पण महाराष्ट्रनी प्रजा अनेक जखमो झील्या छतां, अनेक विदारण सहन कर्यां छतां, हजी उज्ज्वळ मुखे झझुमी रही छे. आजे पण भारतनुं गौरव तेने शिर साटे छे. धर्मरक्षा तेने प्रभुअे सोंपी. देवी भवानीनी [illegible] खंड अने गुरु समर्थनी शिक्षा खडे शिवाजी महाराजे अे प्हेरगीरी स्वीकारी. आजे प्रतापगढमां प्रताप नथी, सिंहगढमां सिंह नथी, तोरणीआमां तोरण नथी, छतां महाराष्ट्रनी प्रजा धर्म रक्षानो अे प्हेरो भरे छे. आजे अे महान संरक्षक पण चाल्यो. छेवट सूधी अेनां अस्त्र शस्त्र सज्ज हतां, मृत्यु समाधि पर्यंत पण अेणे बख्तर उतार्युं नहतुं, अने अेनो पडकार हजी पण गाजे छे.

स्थितिं नो रे दध्याः क्षणमपि मदांधेक्षणसखे
गजश्रेणीनाथ त्वमिह जटिलायां वनभुवि ॥
असौ कुंभिभ्रांत्या खरनखरविद्रावितमहा-
गुरुग्रावग्रामः स्वपिति गिरिगर्भे हरिपतिः ॥

(भावार्थ)—हे मित्र, मदथी अंध थयला अेवा ओ गजश्रेणीनाथ (गजेन्द्र), तुं आ जटिल वनभूमिमां क्षणभर पण निवास न कर, कारण के मोटामां मोटा पत्थरोने पण हस्ति समजीने नखवती खणवावाळो अेवो सिंह (केसरी) अहीं गिरिगुहामां शयन करे छे.

महाराष्ट्र स्त्रीमंडळ आजदिन सूधीनुं मोढुं खुल्लुं राखी उघाडे माथे गर्वथी फरी शके छे अे आ प्हेरगीरीनां परिणाम छे. अन्य संस्कृतिओना भयानक सतत हुमलाओ छतां स्वदेशी साडी अने

स्वदेशी खणथी शोभती महाराष्ट्रनी महिलाओ धर्मगौरव, देशगौरव आज पण जाळवी रही छे अे प्रताप आ म्हेरेगीरीनो छे. स्त्रीरक्षा, गृहरक्षा, धर्मरक्षा बीजा प्रांतोमां पण थई छे, पण आजे लखनौ जाओ, कलकते जाओ, दील्ली जाओ. आजे पण स्त्रीरत्नोने पडदा अने बुरखा सिवाय छुटको नथी. ... रक्षको सबळ अने सज्ज होय अने ज्यां धर्मपालन यत्किंचित् पण होय त्यां पडदा के बुरखाने स्थान नथी. त्यां नाजरोनो खप नथी.

आज गायकवाड, सिंधीआ, होल्कर अे म्हेरेगीरीना स्मरणस्तंभो छे. राजा जसवंतसिंह अने कुमार रामसिंहना अभय वचनथी श्री शिवाजी महाराज बादशाह औरंगजेब पासे दिल्ली पधार्या त्यारे हजारो बख्तरीआ गोस्वामीओ गोकुळ, मथुरा, वृंदावन, मां मात्र शब्दनी वाट जोता सज्ज फरता हता. अे महाराष्ट्रनी प्रथम भरती हिन्दुस्तानमां फेलाई. त्यार पछी अनेक भरतीओ चारे दिशामां प्रसरी अने अनेक हुमला छतां चालुज रही. अहमदशाह अबदुल्ली दुर्रानीअे अे भरती अटकावी तो पण आजे महाराष्ट्र भारतवर्षमां ओतप्रोत विराजे छे. अने ज्यां होय त्यां अेज भाषा, अेज मुखमुद्रा, अेज म्हेरवेष, अेज हरिकीर्तन, अेज ज्ञानोबा–तुकाराम, अेज आमचे–तुमचे. सरकारनी मराठा रेजीमेन्टोमां पण ज्ञानोबा–तुकाराम, मुंबईनी मारकीटो तथा मीलोमां पण ज्ञानोबा–तुकाराम अने आळंदीथी प्रतिवर्षे पालखी विठ्ठलनाथ जाय अने दिवसोना दिवस सूधी हजारो माणसो साथे होय त्यां पण ज्ञानोबा–तुकाराम.

आ धर्मभावना अने राष्ट्रभावना अनेरी छे. प्रान्ते प्रान्तने पोतानुं गौरव व्हालुं होय छे ने महाराष्ट्रने पण पोतानुं प्रान्तिक गौरव व्हालुं छे.

पण ज्यारे " गुणवंती गुजरात " अने " आमार सोनेर बंगला " तथा " आह्मी महाराष्ट्रांतले लोक " नो लय ज्यारे " सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां हमारा " मां थाय त्यां प्रत्येक प्रान्तनी निरनिराळी प्रतिभा जोवानी मजा आवे. आमां पण महाराष्ट्र तरी आवे छे, अे बीजा प्रान्तोअे नोंधवा जेवुं छ. अने, तेमां बे भात पडे छे. अेक भातना प्रतिनिधिओ रानाडे, तेलंग, गोखले छे. अने बीजी भातमां चीपलुणकर, आगारकर, देशमुख अने आपणो म्हेरेगीर मूर्तिमंत छे. अत्यंत सादाई, भोग–अैश्वर्यनो त्याग, सामान्य मनुष्य पेठे वर्तन, अने देशकार्यमां सतत प्रयास, अडग धैर्य अने निडरता तथा अनिमिष जागृति अे आ बीजी भातनां लक्षणो छे; अने तेमां पण लोकमान्य तो विरलज अने अेमनी लोकप्रियता पण विरल. महाराष्ट्र जेटलुं अेमनामां मूर्तिमंत हतुं अेटलुं बीजी कोई पण व्यक्तिमां न हतुं. श्रीछत्रपति शिवाजी महाराज पछी सौथी मोटो महाराष्ट्री लोकमान्य बाळ गंगाधर तिलक छे.

मातुःश्री जीजीबाईअे शिवाजीने कह्युं के सिंहगढ परधर्मीओने हाथ होवाथी सहवारे सूर्य नारायणनां दर्शन करती वेळा तेमने पूजनमां विक्षेप थाय छे. शीवोबाअे प्रतिज्ञा करी के बीजी सवार प्हेलां सिंहगढ सर थवो जोइअे. नरवीर तानाजी मालसूरे लग्नमंडपमांनी क्रिया अधुरी मूकी अेकदम सवार थयो अने चाल्यो सिंहगढ तोडवा. रात्रे तुमुल युद्ध जाम्युं. तानाजी काम आव्या अने तेमना बंधु सूर्याजीअे किल्लो सर कर्यो. सूर्योदय थता प्हेलां शिवाजीनी प्रतिज्ञा पूर्ण थई, पण तानाजी गया अेम सांभळी तेमणे पोकार कर्यो के " गढ आला, पण सिंह गेला ". आजे

भारतवर्षनी प्रजा पण विलाप करे छे के "गढ आला सिंह गेला". नोकर शाही, दफ्तरशाही, ब्युरोक्रसीना अभेद्य किल्लामां गाबडुं पडयुं छे पण अे गाबडुं पाडनार अर्वाचीन तानाजी मालसूरे पण आज काम आव्यां.

अे योद्धाने कोईनी परवा न हती. कोईनी दरकार न हती. लक्ष्य कदि चूक्यां न हतो. लक्ष्य चूकाववाना घणा घणा प्रयत्नो थया- मित्रगण तेमज शत्रुगण तरफथी. अेणे शत्रुओने तो कदि नमतुं आप्युं नहि पण मित्रोने पण अनेकवार तरछोडी नांख्या. पूनानी प्रान्तिक राजकीय परिषद वखते, सूरतनी राष्ट्रीय परिषदने प्रसंगे पण लक्ष्यथी आ योद्धाने कोई चलायमान करी शक्या नहि. शत्रुओअे प्रथम तेने मोहपासमां बांधवा प्रयत्न कर्या पण

पापनी मोहिनी पेखे न त्होय मोह पामता।
पुराणी ने पुण्यवंती अे आर्योनी अेह आर्यता.॥

भय बताव्या. पण आ वीर तेनाथी मोह पाम्या नहि. छेवटे तेना उपर हुमला शरु कर्या. भारतवर्षना अर्वाचीन राष्ट्रीय इतिहासमां स्नेहीओ तेमज विरोधीओना अपशब्दो जेटला तिलके सहन कर्या अेटला कोईअे कर्या नथी. पण अपशब्दो खाईने कोई दहाडो बेसी रह्यो नहि. अेक फटकानां स्हामे चार फटका तेणे लगाडी काढया छे अने कदि कोईनो गांज्यो गयो नहि, अने अंते नोकरशाहीनो अभेद्य किल्लो तूट्यो अने स्वराज्यमंत्र सिद्ध कर्यो! आजे दुश्मनो पण अेना घा वखाणे छे!

शिवाजी सामान्य माता पिताने पेटे अवतर्या हता. ते कोईना

ગાદીવારસ ન હતા. ન હતું તેમને પાસે ધન કે ઐશ્વર્ય; ન હતી સત્તા કે ન્હોતાં લશ્કર; ન હતો વગ કે ન્હોતો વસીલો; શાહાજી મહારાજ વિજાપુરમાં લશ્કરમાં અમુક ...ીના જમાદાર હતા પણ તેમના મહાનુભાવ કુળદીપકે મહારાષ્ટ્રને તારી ભારતવર્ષની પ્રજાના હૃદયમાં સામ્રાજ્ય સ્થાપ્યું. તિલક પણ રત્નાગિરીના એક ચિત્પાવન બ્રાહ્મણ પંતુજીના ચિરંજીવી હતા. પણ એ પંતુજી—શ્રી. ગંગાધર રામચંદ્ર તિલક—ના પુત્રે પણ ભારતવર્ષની પ્રજાના હૃદય ઉપર સામ્રાજ્ય સ્થાપ્યું છે. એની કીર્તિ અમર છે! નરરંકના પુત્રરત્નોએ નિરાશ થવાનું કારણ નથી. આ બે ઉદાહરણો બસ છે. જ્વલંત દેશાભિમાન, અચૂક સાવધાનતા, અચલ શ્રદ્ધા, અડગ ધૈર્ય, અખંડ શૌર્ય અને અનન્ય ભક્તિ હોય તો બાકી બધું સરળ છે.

પુરાણ તો અઢાર છે—વ્યાસજીનાં રચેલાં. પણ આ વિક્રમની વીસમી સદીમાં એક નવું પુરાણ રચાયું છે. બીજાં પુરાણોની પેઠે એનું મંગળાચરણ પણ શ્રી ગણપતિના નામથી છે—એ પુરાણનું નામ શ્રી રૌલેટપુરાણ છે અને તેના પ્રથમ કાણ્ડનું નામ તિલક—કાણ્ડ છે. ઘણા ઘણા સરકારી અમલદારોને તિલકના નામથી કંપવાયુ થતો, કેટલાએક ત્રાસ પામતા, કોઈ કોઈ અભડાતા—કોઈ છેટે જઈ શેરીએ ભરાઈ શેરી માંહેલા સિંહની પેઠે વર્તતા. ચચ્ચાર વખત કેસરીને તેમણે પિંજરામાં પૂર્યો—સાબરમતીથી માંડલે લઈ ગયા. છતાં કેસરી તે કેસરી, એની ગર્જના કોઈ બંધ કરી શક્યું નહિ અને અંતે અમલદારી વર્ગને હાર ખાવી પડી, અને સ્વરાજ્યની ભાવનાનો ના૦ શહેનશાહે તા૦ ૨૦ મી ઓગસ્ટ ૧૯૧૭ ના સંદેશામાં જાહેર રીતે સ્વીકાર કર્યો. નોકરશાહી તે

कदिपण माफ करशे नहि अने तेमना अज्ञान अने अल्पदृष्टिना नमुना तरीके श्री रौलेट पुराणनुं तिलक काण्ड अमर रहेवानुं !

अे नरकेसरीने पंडित मेक्समुलरे ओळख्यो अने पिंजरांनी मुदत ओछी करावी तो जगतने अेणे Orion अने Arctic Home in the Vedas आप्यां. अने बीजीवार पिंजरांमां पूर्यो त्यारे अेणे 'गीता रहस्य' आप्युं. अेमने बीजीवार केदमां लई गया त्यारे अेज मुंबईनी प्रजाअे छ दिवस हडताळ पाडी जगत्‌ने बताव्युं के प्रजा निस्तेज छतां निर्जीव नथी. आजे तो प्रजा घणी आगळ छे, घणी बळवान छे, पण अे बळनुं पोषण मोटे भागे अे बळवंतनुं हतुं. "केसरी" पत्रद्वारा महाराष्ट्रनी प्रजा प्रत्येक अठवाडीअे अे पोषण पामती अने तेने अे पोषण गयां चालीस वर्ष सुधी अविच्छिन्न मळ्युं छे. अेनो फेलाव घणी वार अन्य कोई पण पत्र करतां वधारे हतो; आज पण तेना विस्तारनी अन्य पत्रकारोने इर्ष्या आवे अेटलो ते छे.

सने १९१५ नी मुंबई कोंग्रेस वखते मीसीस बेझन्टे होमरुलनो मंत्रोच्चार कर्यो अने लोकमान्य तिलके ते झील्यो—वधाव्यो, अने अेवी रीते सूरतथी विखुटो पडेलो राष्ट्रीय पक्ष, लखनौ खाते कोंग्रेसमां जई मळ्यो अने त्यारपछीनी कोंग्रेसोनो चमत्कार तदन जूदी जातनो छे. आजे तो घणी वातो रहेली थई गई छे. आजे सरकारी अमलदारो अेकनुं नाम ले तो सात तैयार थई जाय छे. अेकने दबावे तो बीजा सत्तर जागे. जे शब्दोनुं उच्चारण पण राजद्रोह गणातां ते शब्दो आजे सिद्ध थया छे. आजे असफअलीने दिल्हीमां दबावे तो मुंबईथी बचावनो वारीस्टर जाय; नागपूरमां वैद्यने संतापे तो कलकत्तेथी सी, आर, दास जई पहोंचे अने छोडवी लावे;

पंजाबमां मार मार थाय तोपण माळवीय, नेहरु, अने हसन इमाम जई प्होंचे अने सौ वातोनी जगतने जाण करी पीडितोनी पीडा शांत करवानी सामग्री अेकटी करे. पण १९१४ प्हेलां युग जूदो हतो. तिलकनुं नाम लेतां डरे अेवा बहादुरो आपणे त्यां हता. ते दिवसोमां पडखे उभा रहेनार थोडा हता, सहाय करनार ओछा हता, जागृती पण ओछी हती. अेवा दिवसोमां पण आ भारत–तिलक निराश थयो नहि, थाक्यो नहि, विसामो खावा पण बेठो नहि; अनेक लडाईओ लडतां, अनेक झखमो झील्या, अनेक यातनाओ सहन करी. अेकज मंत्र–जाप शरु राख्यो के "स्वराज्य मारो जन्मसिद्ध हक छे–हुं ते प्राप्त करीश" अने अेज मंत्रनी संपूर्ण सिद्धि करवाने चाल्यो–प्रभु दरबार.

"सज्जन जगता! कळेल तुजसी रहस्य शांतिल कां!
"उघड्या नयनें पहा तरी या हिन्द भूमिच्या तिलका"

आ पुस्तक "भारत–सेवा" प्रिंटिंग प्रेस नं. ४-६ मरीन क्रोस लेन बेन्क स्ट्रीटमां रा. हरजीवन कालिदास महेताअे छाप्युं अने रा. मोतीलाल शामलदास शर्मा अे नं. १० सेन्डहर्स्ट रोड गीरगाममां प्रगट कर्युं छे.

નવાં પુસ્તકો તયાર છે!

વાંચો અને વિચારી ખરીદો!

૧. અપૂર્વ ઢબમાં લખાયલી સુન્દર રસીલી નવલકથા:

યૌવનનાં સ્મરણો.

તૈયાર છે! લેખિકાઃ-સૌ. પ્રમદા. તૈયાર છે!!

આ પુસ્તકની ખુબી તે વાંચ્યાથીજ સમજાય તેવી છે. એકવાર હાથમાં લીધા પછી તે પૂરૂં કર્યા વિના છોડવાનું મન થાય તેવું નથી. કિ. બાર આના, પોસ્ટેજ જુદું.

૨. પ્રસિદ્ધ બંગ કવિ રવીન્દ્રનાથના એક અત્યુત્તમ પુસ્તકનો અનુવાદ.

(રવિબાબુની છેલ્લામાં છેલ્લી છબી સાથે.)

તૈયાર છે! વિશ્વભારતી. તૈયાર છે!!

અનુવાદકઃ-રા. હીરાલાલ હરજીવનદાસ ગણાત્રા, બી. એ.

કિંમત રૂપીઓ એક, પોસ્ટેજ જુદું.

લખોઃ-મોતીલાલ શામળદાસ શર્મા,

જમનાબાઇ મેન્શન્સ, સેંડહર્સ્ટ રોડ, મુંબઈ, ૪.

लोकमान्यने चरणे !

(गोपीका गीतनी लय)

जगतमां घणा वीर शोभता,
देश-देशीने [illegible] सेवता;
पण दिसे कदा वीर केसरी?
तीलकराज शा भावना भरी!

*   *   *

राष्ट्र प्रेम ए धर्म छे खरो,
कर्मयोग छे जीवनो झरो;
सत्य ए [illegible] सिध्ध ते करे,
लोकमान्य शी भावना भरे.

*   *   *

स्वराज धून ज्यां शब्द शब्द छे,
प्राण प्राणमां हिंद हिंद छे;
मातृभूमिनो बाल ए खरे,
रगरगे सदा चेतना भरे!

*   *   *

हृदय मन्दिरे मूर्ति ए खडी,
नमुं नमुं सदा जीवनथी [illegible];
मंत्र जाप के भजन कितने,
धून जागती नाम तीलकने!

*   *   *

राजवी कहे! देव को कहे!
विविध भावथी नाम सहु लहे;
अमर आत्म ने अमर नामना,
तीलक नाम तो जीवनुं सदा! (रायचुरा)

The Bombay Art Printing Works, Fort.